• बाल कविता...

अच्छा होता...

अच्छा होता चांद हमारे
घर के ऊपर होता
कभी-कभी रातों में उसका
हाथ पकड़ कर सोता
आसमान की सारी बातें
वो मुझको बतलाता
रूठ गए तारों के किस्से
गा कर मुझे सुनाता
छुट्टी के दिन मुझको लेकर
दूर गगन में जाता
अन्तरिक्ष के नीले वन में
सैर मुझे करवाता
पास किसी तारे के घर में
रुक कर खाना खाते
खा पी कर जल्दी से वापस
अपने घर आ जाते
बिजली जाती घर के अन्दर
उसको हम ले आते
और चांदनी में हम सारे
खुल कर हंसते-गाते
एक झिंगोला सिलवा देते
जाड़ों में जब रोता
अच्छा होता चांद हमारे
घर के ऊपर होता

■ प्रदीप शुक्ल

• चुटकुले...

पप्पू की छत टपक रखी थी ठीक डाइनिंग टेबल के ऊपर।
प्लम्बर ने पूछा– आपको कब पता चला कि छत टपक रही है?
शराबी– जब कल रात को मेरा पैग 3 घंटे तक खत्म नहीं हुआ।

एक चींटी (दूसरी चींटी से)– सामने से हाथी आ रहा है, हाथ हल्के कर लें क्या?
वैसे भी बहुत दिन हो गए, हमने किसी पर अपने हाथ–पैर नहीं आजमाएं.....।
दूसरी चींटी– नहीं यार! रहने दे, वर्ना लोग कहेंगे कि अकेले देखा तो मारा।

स्टोरकीपर– चीनी यहां नहीं मिलती ?
सरदार– हम पागल नहीं हैं, पढ़ें लिखे हैं, दवा पर लिखा है शुगर फ्री (Sugar free) चीनी तो तुम्हारा बाप भी देगा हां।

• जानकारी...

पृथ्वी पर पानी

पृथ्वी का ऊपरी सतह पानी से भरा हुआ है। कहा जाता है कि इसके तीन भाग में पानी है और एक भाग में जमीन। इसका मतलब है कि धरती के 70 प्रतिशत भाग में पानी भरा हुआ है इसके बाद भी लोगों को पानी के लिए भटकना पड़ता है। इसके पीछे की वजह है कि धरती का ज्यादातर पानी खारा है। वहीं, 1 फिसदी से भी कम पानी पीने के लायक है। लोग पानी पीने के लिए ट्यूबवेल, कुआं, नदी या फिर भूजल का उपयोग किया जाता है। लेकिन ग्लोबल वॉर्मिंग की वजह से लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है।

कई रिसर्च की रिपोर्ट बता चुकी है आने वाले कुछ सालों में अंडरग्राउंड वाटर खत्म हो जाएगा। इसका असर दुनिया के कई मुल्कों पर पड़ रहा है। आपको बता दें कि भारत इससे अछूता नहीं रहा है। आईटी हब बेंगलुरु में पानी का संकट लोगों पर पड़ रहा है। यहां के कई इलाकों में अब टैंकरों से पानी पहुंचाने का काम किया जा रहा है। लेकिन पानी का संकट क्यों होता है और ये कब तक धरती से खत्म हो जाएगा।

धरती में 312 मिलियन क्यूबिक मील पानी- लाइव साइंस की रिपोर्ट के अनुसार सस्केचेवान यूनिवर्सिटी के साइंटिस्टों ने साल 2021 में एक रिसर्च की थी। इस रिसर्च का मकसद था जानना कि आखिर पृथ्वी में कितना पानी बचा है। इस रिसर्च के जरिए जानकारी मिली की महासागरों में सबसे अधिक पानी जमा है। रिपोर्ट की माने तो यहां करीब 312 मिलियन क्यूबिक मील पानी का भंडार है। इतना ही नहीं जमीन के भीतर यानी कोर में करीब 43.9 मिलियन क्यूबिक किलोमीटर जल भरा हुआ है। इसका मतलब हुआ कि दोनों को जोड़ दिया जाए तो ये धरती का एक चौथाई हिस्सा पानी से भरा हुआ है। इतना ही नहीं अंटार्कटिका में जो बर्फ जमी है उसमें करीब 6.5 मिलियन क्यूबिक मील पानी है।

पानी खत्म होने की वजह- रिपोर्ट की मानें तो जमीन के अंदर मौजूद सारा पानी पीने के लिए सही है और इसे आसानी से पिया जा सकता है। रिपोर्ट की माने तो जो भी पानी हम जमीन के अंदर का उपयोग करते हैं वो हमेशा से ही जमीने के अंदर भरा हुआ है। वहीं पानी निकाले जाने के बाद बारिश के साथ ही वापस भर जाता है। लेकिन वर्तमान समय में देखा जा रहा है कि लोग घर या किसी भी तरह का निर्माण करने से खाली जगह नहीं बची है। इससे बारिश का पानी नालियों या किसी अन्य तरीके से समुद्र तक पहुंच जा रहा है। इसकी वजह से अंडर ग्राउंड पानी की कमी हो रही है।

• मणिपुरी लोक-कथा

तुम्हारा बेटा...

एक गांव में चंद्र नाम का लड़का अपने पिता के साथ रहता था। उसकी माता का देहांत काफी समय पहले हो गया था। चंद्र के पिता ने दूसरा विवाह नहीं किया। उन्हें भय था कि विमाता, चंद्र को ममता नहीं दे पाएगी।

पहली पत्नी की मृत्यु के कुछ वर्ष तक वे स्वयं ही चंद्र को पालते रहे, किंतु समय बीतने के साथ-साथ उनका शरीर कमजोर होता गया। चंद्र पर सारी जिम्मेदारी डालना ठीक नहीं था, इसलिए वे दूसरे विवाह के लिए तैयार हो गए।

चंद्र की नई मां सुंदर तो थी किंतु चंद्र से नफरत करती थी। वह अक्सर चंद्र के पिता से उसकी झूठी शिकायतें लगाती।

एक दिन उनकी पत्नी बोली- तुम चंद्र को किसी घने जंगल में छोड़ आओ।

यह सुनकर वह कांप उठे। भला अपने पुत्र को जंगल में कैसे छोड़ आएं।

चंद्र की सौतेली मां रस्सी दिखाकर बोली, यदि उसे जंगल में न छोड़कर आए मैं फांसी लगा लूंगी और तुम्हें जेल जाना पड़ेगा।

पिता ने सोचा कि चंद्र की किस्मत में जो लिखा है वह तो उसे भोगना ही होगा। हो सकता है इस घर से निकल जाने में ही उसकी भलाई हो।

एक दिन उन्होंने चंद्र को साथ लिया और घने जंगल में जा पहुंचे। चंद्र का माथा चूमकर बोले, तुम बैठो, मैं जरा नदी से पानी पी आऊं।

चंद्र शाम तक पिता की प्रतीक्षा करता रहा। पिता को तो लौटना था ही नहीं, न ही वे लौटे। तभी आकाश मार्ग से शिव-पार्वती गुजरे। चंद्र के गालों पर सूखे आंसुओं की लकीरें देखकर पार्वती का मन पिघल गया, उन्होंने शिवजी से प्रार्थना की कि वे चंद्र की सहायता करें।

चंद्र शाम तक पिता की प्रतीक्षा करता रहा। पिता को तो लौटना था ही नहीं, न ही वे लौटे। तभी आकाश मार्ग से शिव-पार्वती गुजरे। चंद्र के गालों पर सूखे आंसुओं की लकीरें देखकर पार्वती का मन पिघल गया, उन्होंने शिवजी से प्रार्थना की कि वे चंद्र की सहायता करें।

अगले दिन सुबह चंद्र उठा। भोजन व आश्रय की तलाश में वह आगे बढ़ा। जंगल में एक वीरान महल को देख कर वह चकित हो उठा। अंदर जाकर तो उसकी हैरानी और भी बढ़ गई। सभी दरबान तथा नौकर-चाकर अपने-अपने स्थान पर सो रहे थे।

राजसी पलंग पर एक रूपसी युवती सो रही थी। एक तेज व भयानक गर्जन से चंद्र चौंका। एकाएक उसके मन में आया, काश! वह छोटा-सा जीव बन जाता और आने वाली मुसीबत से बच जाता। चमत्कार! ज्यों ही उसने ऐसा सोचा, वह छोटे से जीव के रूप में बदल गया।

उसने आड़ में से देखा कि एक विशाल राक्षस महल में प्रवेश किया। उसने बिस्तर के पास पड़ी हुई एक छड़ी से युवती को छुआ।

वह उठ बैठी। सारे महल का जीवन लौट आया। पक्षी चहचहाने लगे।

नौकर-चाकर चुपचाप अपने काम में जुट गए।

राक्षस ने भरपेट भोजन किया। वह रूपसी युवती सिर झुकाए बैठी रही। राक्षस ने कहा मुझसे शादी करोगी?

युवती ने घृणा भरे स्वर में उत्तर दिया, एक राजकुमारी की शादी राक्षस से कभी नहीं होगी।

राक्षस ने फिर सारे महल को जादुई नींद में सुला दिया। चंद्र अपनी छिपी शक्ति पहचान चुका था। वह अपने असली रूप में वापस आ गया। उसने छड़ी से उस राजकुमारी को जगा दिया। वह पहले तो चंद्र को देखकर डर गई किंतु चंद्र के मीठे स्वर ने उसे आश्वस्त किया।

राजकुमारी के सामने ही चंद्र ने छड़ी के दो टुकड़े कर दिए। उसने अपनी शक्ति के बल पर सेना मंगवा ली। दरवाजे पर सेना तैनात की।

राक्षस लौटा तो महल की रौनक देखकर क्रोधित हो उठा। सेना ने तीरों की बौछार से उसे छलनी कर दिया।

कुछ ही दिनों में चंद्र और राजकुमारी विवाह-बंधन में बंध गए।

चंद्र की कार्यकुशलता से राज्य उन्नति करने लगा। इतना सब होने पर भी वह अपने माता-पिता को भूला नहीं था। वह अपने पिता के पास गया। पिता उससे मिलते ही लिपटकर रो दिए।

विमाता अपनी करनी पर पछता रही थी। चंद्र ने उसके चरण स्पर्श किए और बोला, मां, मैं तुम्हारा बेटा हूं।

-रचना भोला यामिनी

• रोचक...

जहरीले पौधे

कसावा एक बहुत ही जहरीला पौधा है जो आमतौर पर उत्तरी और मध्य अमेरिका में पाया जाता है। इसके पत्ते, बीज, और कई अन्य भाग जहरीले होते हैं और उनका सेवन करने पर व्यक्ति की मौत हो सकती है। डैंगर लिली पौधा ज्यादातर उत्तरी अमेरिका में पाया जाता है और इसके संपूर्ण रूप में जहरीले होते हैं, विशेष रूप से पत्तों और बीजों में। फाईटोनिया एकूटेटा उत्तरी अमेरिका और कनाडा के विभिन्न भागों में पाया जाता है और इसके फल और पत्ते जहरीले होते हैं। कैस्टर बीन का पौधा भारतीय मूल का है और इसके बीज बहुत ही जहरीले होते हैं। इन बीजों का सेवन करने पर बहुत गंभीर स्थितियों में मौत हो सकती है। ऑल्डमैन क्लेब या नरकी एक बहुत ही जहरीला पौधा है जो आमतौर पर उत्तरी अमेरिका के ठंडे क्षेत्रों में पाया जाता है। इसके पत्ते और बीज बहुत ही जहरीले होते हैं।

• नदरई का पुल...

नदरई का पुल, भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित है। यह पुल इंजीनियरिंग का एक अद्भुत नमूना है। इसे 1882 में आयरलैंड के कार्क विश्वविद्यालय के इंजीनियरों और ब्रिटिश शासनकाल के निर्माण विभाग ने मिलकर डिजाइन किया था। यह पुल दो नदियों को पार करता है। काली नदी पुल के नीचे बहती है, जबकि हजारा नहर को पुल के ऊपर से गुजारा गया है। यह संरचना दुनिया में बहुत कम जगहों पर देखने को मिलती है।